BSES

बीएसईएस इलाके में सौर ऊर्जा की उत्पादन क्षमता बढ़कर हुई 106 मेगावॉट

सौर ऊर्जा से बीएसईएस उपभोक्ता बचा रहे सालाना 68 करोड़ रूपये

नई दिल्लीः 23 फरवरी। बीएसईएस इलाके में अब रूफटॉप सौर ऊर्जा की कुल उत्पादन क्षमता बढ़कर 106 मेगावाट यानी 1 लाख 6 हजार किलोवॉट हो गई है। बीएसईएस उपभोक्ताओं ने सौर ऊर्जा के 3000 से अधिक प्लांट लगाए हैं। इन उपभोक्ताओं में 1805 घरेलू उपभोक्ता हैं, जबकि 655 शैक्षिक संस्थाएं, 554 व्यावसायिक इकाइयां, 35 औद्योगिक इकाइयां और 91 अन्य श्रेणियों के उभोक्ता हैं। बीएसईएस ने इन प्लांट्स को नेट मीटरिंग के माध्यम से अने ग्रिडों से जोड़ दिया है।

छतों पर सौर ऊर्जा प्लांट लगाने से इन उपभोक्ताओं को सालाना कुल 68 करोड़ रूपये की आर्थिक बचत हो रही है। करोड़ों की यह बचत ग्रिड की पारंपरिक बिजली का बिल्कुल न इस्तेमाल न करने या कम करने की वजह से हो रही है। साथ ही, ग्रिड की बिजली की कम खपत करने से, इनमें से ज्यादातर उपभोक्ता, दिल्ली सरकार द्वारा बिजली पर दी जा रही सब्सिडी के दायरे में भी आ गए हैं। गौरतलब है कि जिन उपभोक्ताओं ने रूफटॉप सोलर पैनल लगाए हैं, उनके बिजली बिल में भारी कमी देखने की मिल रही है।

वित्त वर्ष 2021–22 में बीएसईएस ने 1000 और रूफटॉप सौर ऊर्जा प्लांटों को एनर्जाइज करले का लक्ष्य रखा है। उल्लेखनीय है किघरेलू समेत शैक्षिक व धार्मिक संस्थाओं, रेलवे स्टेशन, मेडिकल कॉलेज, जेल, आदि तमाम श्रेणियों के उपभोक्ताओं ने सोलर पावर प्लांट्स लगाए हैं।

सौर ऊर्जा पैनल्स लगवाने के लिए क्या है स्कीमः

- सेलर पैनल्स लगवाने के लिए दो मॉडल्स उपलब्ध हैं––रेस्को और कैपेक्स मॉडल। रेस्को मॉडल के तहत पैनल लगवाने पर उपभोक्ता को तुरंत अपनी ओर से कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ता, इसका खर्च वेंडर द्वारा वहन किया जाता है।
- केंद्र सरकार के नवीन व अक्षय ऊर्जा मंत्रालय की फोज–2 गाइडलाइन अब उपभोकताओं के लिए उपलब्ध है। अब एक घरेलू उपभोक्ता को सौर ऊर्जा पैनल्स लगाने के लिए 40 प्रतिशत तक की कैपिटल सब्सिडी मिल सकती है। यह सोलर के लोड पर निर्भर करेगा।

क्यों लगाएं सौर ऊर्जा के पैनल्सः

- एक किलोवॉट का रूफटॉप सौर ऊर्जा पैनल मासिक 100 से 120 यूनिट बिजली का उत्पादन करता है।
- पैनलों पर आने वाली लागत साढ़े तीन से चार साल के भीतर वसूल हो जाती है।
- अगर अपनी खपत से अधिक सौर ऊर्जा का उत्पादन हो रहा है, तो उसे डिस्कॉम को बेच सकते हैं और इसके बदले डिस्कॉम आपको डीईआरसी द्वारा अप्रूव्ड दर पर भुगतान भी करेगी।
- सौर ऊर्जा पैनल लगाएंगे, तो आप ग्रिड की बिजली की कम खपत करेंगे, जिससे आपके बिजली बिल कम आएगा। पारंपरिक बिजली की खपत कम होने से आपको दिल्ली सरकार की सब्सिडी का फायदा मिल सकता है।

दिल्ली में क्या है सोलर एनर्जी का भविष्यः

- दिल्ली सोलर पॉलिसी के मुताबिक, दिल्ली में एक साल में करीब 300 दिन धूप खिलती है और लगभग 31 वर्ग किलोमीटर का रूफटॉप स्पेस सौर ऊर्जा पैनल्स लगाने के लिए उपलब्ध है।
- अनुमानों के मुताबिक, दक्षिण और पश्चिम दिल्ली में करीब 800 मेगावॉट, और पूर्वी व मध्य दिल्ली में करीब 200 मेगावॉट सौर ऊर्जा उत्पादन की क्षमता है।

बीएसईएस प्रवक्ता के मुताबिक, समावेशी विकास की दिशा में सौर ऊर्जा काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। राष्ट्रीय राजधानी में इसकी क्षमता का पूरा इस्तेमाल करने के लिए बीएसईएस लगातार प्रयास कर रही है। इस कड़ी में बीएसईएस के सोलर सिटी और सोलराइज प्रोजेक्ट्स गेम चेंजर साबित होंगे। बीएसईएस के सोलर प्रोजेक्ट्स, उपभोक्ता और डिस्कॉम के साथ साथ पर्यावरण के लिए भी काफी लाभदायक हैं।

बीएसईएस ने सौर ऊर्जा के जिन प्लांट्स को नेट मीटरिंग से जोड़ा है, उनमें 1 किलोवॉट से 2000 किलोवॉट तक के सैंक्शंड लोड वाले प्लांट्स हैं। उपभोक्ताओं को अब बिजली बिल में कमी के रूप में, सौर ऊर्जा नेट मीटरिंग का लाभ मिलना शुरू हो चुका है। सभी श्रेणियों के उपभोक्ताओं ने बीच इसकी लोकप्रियता बढ़ी है।

दिल्ली की प्रमुख बिजली वितरण कंपनियां बीआरपीएल और बीवाईपीएल आर–इंफ्रा तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के बीच संयुक्त उद्यम हैं।